

ग्रीष्मक मृति संज्ञाया ॥
प्राप्ति ग्रीष्मक मृति संज्ञाया ॥



विज०

श्रीगदेंश्चायनमः॥ जयजयजगद्गुरकं दा॥ सत्यज्ञानां श्रीब्रह्मानं
 दा॥ सत्यिदानं दमूर्तीभिसे दा॥ जगद्वद्याश्री हुरी॥॥ जयजयगली
 तभिसे दजरवीका॥ परमपुण्ड्राजति निर्मला॥ अनंतकोठीब्रह्माउपा
 का॥ तुसीलीलाजगंगा॥ अनमोलजंगदहनप्रीयजनंगा॥ सकव
 अंगंगचकश्रीरंगा॥ निर्धिका लिंगंगा॥ अज्ञयजव्यंगा॥ जग
 हुका॥॥ नमोंमहामायाजादिकारपां॥ जयवेदनिलयावेदरक्षपां॥
 अविनाशतुंवैकुंठगापां॥ वीक्षपीउनिजज्ञय॥॥ संपत्ताचौथाज

७१९॥

हुरी

११९॥

(२८)

आयतेये॥ पुतनां द्वो त्रो लो जगं नाथे॥ यशो दक्षे धे सं निकृष्ट्या तो।
 सद्गुरु ज्ञाली सप्रेमे॥ यथा मृगं त्रो गजीष्ट ठकले॥ अगवं तें चाकवो
 च विले॥ मासे पूर्वे पुर्व्य फल जाल विश्वरुठ कर्ले तरीच व्यानं द
 लेकां नकृतागोकुकी॥ द्वितीय सम्ब्रेष्ट श्रेष्ट श्रेष्ट गवकी॥ राजद्रव्य व्या
 वया तेवेकी॥ मयुरे सीगे छ हो वत गत॥ बांसे पुतने चे प्रेतप दीछे॥
 असंभव्य कोणां सीन ठके॥ गवकी बहुत मीकाचे॥ परीनुचले कव
 पांसी॥ ठोकी वाळ प्रेतघोर थोर॥ ननिधे संदिग्भाहेर॥ मगजां गोनि



(3)

ली

॥४॥

तीझंणकुणर ॥ रवेहेके छींतयेदी ॥ पावृहस्तरवातो ऐतीब्बें ॥ ते
 से हस्तचरणदेगके के छे ॥ मावंजाहेर सरफरविलंभवहुतका
 छेंजापोनी ॥ १० ॥ चेतविलावै यानर ॥ माजीघातले प्रेतथोर ॥ जगनी
 सीखाप्रचंउतीवृ ॥ जंखुकवंधावती ॥ ११ ॥ गवकीपाहुतीतेवेकां ॥
 जंम्नीसंगेसुवास सुरचा ॥ १२ ॥ नपु ॥ गदेवतासकाकां तठस्तजा
 ज्यासुवासें ॥ १३ ॥ येकुणसुवासजहुत ॥ कासीयाचाखसंभवित ॥
 टारीपुवनेचेहदर्जेजगंनाथ ॥ कीआकरीप्रीतीने ॥ १४ ॥ हनीचिप

विज०

॥२०॥

(3A)

द्रविनं ह सु ब्रह्मत ब्रह्म ॥ जो माया तीव निर्गुण भूत ब्रह्म ॥ जो निर्विकार सुर
त ब्रह्म ॥ जगच्छ्रद्धश्री कृष्ण ॥ १४ ॥ द्वोजा यो निसंप्रव श्री हन्ती ॥ जगन्नी
वासलीला वक्ता की तो युति ने चेहरा पंक्षी ॥ बन्तर्बाह्यं पुष्पं पंसि र
ला अथ ॥ मृणी निर्जनी सूर्य गेह वायता ॥ गोकुकी ऊज जाले तठस्त ॥
नं ह जालं जक स्माद ॥ मयुर हेना त वेकां ॥ १५ ॥ लोकी सांगी त लेवते
माँन ॥ बाक पुणी ज्ञान्यें चांचले ॥ नं ह सदनं जाला ते वेके ॥ सकङ्गव
कीया समवै तांडिं तो यक्षो हृष्टै सली कृष्ण घेउन ॥ सद्गुर कंठ स

विज०

खंलनयन॥ नं दजबलीगेताथाउन॥ हरीसीउचलोनिजाकींगी॥१८॥
 बदनसवानिंहसदन॥ नं दपानेवलोकुंन॥ मुणेंविघ्नचुकहेंहा
 नंग॥ उत्साहपूर्णसांडिला॥ यासंहपक्षिंउभ्रउन॥ मेवउनिस
 कक्कबासुंक॥ गेस्त्रुहीरंख्यउनसा॥ उत्साहपूर्णनिंहकरी॥२०॥
 नंहसीकैसेवारले॥ कींजाहुजुवांकउलागले॥ कींजमुतमेघ
 वर्डीला॥ जाएपांवरीनिजमायेंगया॥ नंहसीकैसेवारले॥ मरणींसु
 धारसजोगिले॥ कींजानंदध्वजउभ्रमीले॥ तोसोहकलघ्यपंवि॥२२॥

हरी

१८॥

१९॥

५४
कब्लेंकं सासीवर्तसान्॥ पुत्रांपावलीमोदृसदन॥ दचकलेंकं साचे
मन॥ भयेकगोनींव्यापिलें॥ ४॥ मनीक्षेपेकायककं विचारु॥ वैशीनोतो
हक्कहक्कयोर॥ पेटतचालीलें॥ ५॥ मगनारेपेतिस्तवितां॥ ५॥
वारेश्यगोगलागला॥ काळरामगोतोमजला॥ जायुष्यवृक्षकाड
जिला॥ उन्मको निपेहुन्मातां॥ ६॥ वेमछविनेंजांगकरपलेंगमे
काकानेमुळंपाठविलें॥ माझेबक्सींधुचेलीवनगोक्कीलें॥ निस्तेऊ
जालेंसवंगा॥ अध्याजसोगेकुकीनं दमंदिरी॥ हरीनिजविलासाज

"Jointly made by Shriyan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chhatrapati Pala Shinde, Amravati."

५
हरी

गर्भा

द्यमीं॥ तोकलधे सव्यांग वरी॥ जां रुमकरी गंगा वेया॥ ४७॥ येके दि
वसीं प्रातः काकीं॥ सुर्यदर्शिण कर विलेवन मावी॥ वरंगणी निज विचे
तोवेकीं॥ मायादेवी प्रीतीयो॥ ४८॥ विष्णगांघातलात अका॥ बरीपंहु
उलावै कुंरनायका॥ उदगाव॥ ४९॥ वस्त्रसांकीय द्वोहा॥ ४१॥ अ
गांचेकवच जगड़ी वन॥ मायायसि नाली पांघन्या॥ जैस्याजांगणी कृ
ष्ण निज उंन॥ माया गेली घरंता॥ ५०॥ नं हगेआबाही॥ जांगणी ये
कलाश्रीहरी॥ तोंडाक गसुरु हुगचारी॥ कंसतया पाठ वित॥ ५१॥

विज०

॥४८॥



(58)

कं सासीकृष्णं नाकं गुरुर् ॥ मीं तु साकृतुवर्थीं न साचार् ॥ मीं गाऊहों
नि दुर्धर् ॥ जायनं हांगपीं ॥ अआलांगपीं गुपत् प्रेये उंनीं गजपतहो
तापापरवापीं ॥ येकांतदेव निरोगी ॥ कृष्णांवरीलोरलांग ॥ ३३ ॥
सरसाखं निबक्लें सबेग ॥ रुगलोपा इन्द्रीचेजांग ॥ जवकीयेतांश्चीरं
ग ॥ चर्मपासाउीजवलीला ॥ ३४ ॥ कृष्णाजांगपीं तत्रता ॥ वरीलोटे
जवचिता ॥ लैसाहष्टसगरता ॥ कुबुधीतयाउपजलींगधमग
मस्तकीं पहतांवज्जा ॥ चूरहोंगं निजायसमग्र ॥ तैसाचं रपघोते

६
ही
॥४॥

इकठासुर। पीष्टके लाहीनेंगे धालगतां हमीचरणधनर ॥०
प्राणसोउडिइकठासुर। उद्यगिलाहै सदुगचार। चरस्प्रेमिग
वंतें। अ॥ पूर्विकिलाजीहल्याथार। जातांचरणेउमीलाद्राक
गसुर। गाऊचाजालाचूर। तो शोद्धानेर पातली। अ। नं
दजालाबोहेनं पा। तोंगाणात्। अ। मीकालेसकळगवकीजन।।
जैश्र्यकरीतीतेष्टवां। अ। मुंशतीमाठाकोवेंजांपीला। बाल्लसमी
पचूर्पंजाला। जगीजसतवरि लोठला। तमीउगीनउरती। अ। नं ह

विज०

॥५॥

६४

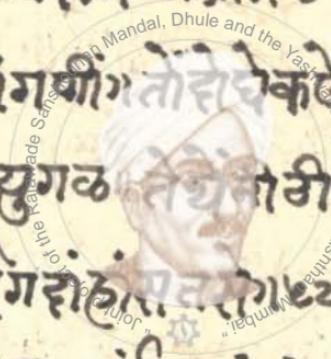
सुरोयशादेसुंहरी॥ विद्युत्येतातिकृष्णांवरी॥ दुंसासीनविसंबेजहो
 गत्री॥ हहर्दिथगीयझोहा॥ ४७॥ जासरनींडायनींझोजनीं॥ विसंबेजको
 चक्रपाली॥ जामृतीच्छुभिरप्री॥ विसरसीहोहरीतें॥ रथा दक्षितां
 कांउतांगुसकीतां॥ विसमेनकाकृष्णजाधा॥ यझोहातेजैकतां॥ पर
 मसुखवाठलें॥ ४८॥ पनीगाहलान्तुर्संकला॥ कोपांसीनकछेहरी
 लीला॥ नसोजांगपींसखका॥ दंगोलागेहकृहकृ॥ ४९॥ चीखलींगो
 वनमाकी॥ हरेंनिजांगभरवीधुकी॥ बक्कीगमांसहितवनमाकी॥

(४)
हरी
गाधा

खेकावयापाठीगरवा॥४५॥साश्चात्त्रैषनागायंग॥तेहेयाहवब
कीगामकुष्ण॥गेष्टांगपींहोधेजन॥गंगतातीकवतुकेंगंधा॥ विज०
येकगैरयेकक्षामवर्णंग| येकविष्ट्युयेकमदनमोहन॥तेगंग
तातिहोधेजन॥चरपीनेपुरवालती॥ठौ॥होधेंबोलतीनंहांग
जींग| जैसेउउपतीमांधी|| इनम् यी| होधेहेयुकीधेउंनीं| जा
वकामाजीधालीती॥४६॥शुक्लीनभरीछेलांगवहन॥हांसती
येकाकउयेकपाहोंन॥स्वककतीलघुरझान॥जाकर्णनय न ॥४७॥

२४

हो घाचे॥ ठथा कीं तेहे घेबा कहिं वर॥ हो घेही लेभती सकुमार॥
 कीं तप स्वीनि वीकार॥ नंदा गंगा गीं दुभले॥ ४८॥ येक्षो हजां गीं गोहि
 गीं॥ येउं निपाहती ऊं गणी॥ तोहे देकहे घेउं नीं॥ हासंतनि पात
 ली॥ ४९॥ मातेचे जान्दु सुगळे॥ तेजे लोडी धालो निघनी का॥ वरीक
 गे निमुख कमळ॥ गदगहां हुंस तरोग॥ शुकी नेमर लेनिजांग॥
 मातेनेउचली लोसवेग॥ पूर्व ब्रह्म हुंनंद श्रीरंग॥ हर्दै हृषीय
 ला॥ ५०॥ पर्वरे सुसीली जांगी शुकी॥ मातेचे वहन जवलोकी व



४५०

नमाकी॥ शब्द्यते यज्ञो हा वेळा की॥ चुंबण हे तहीते॥ ४४॥ त्रोडानमा
 य पाउचलीले॥ हो धेघनां तने उं नि सो डिले॥ गवकणी पातल्या वेवे
 कें॥ रवेक्ष्य याकृष्णाते॥ तो श्रीराम रुद्र वर्णां धावता॥ गंगतां
 बैसो निपिं रंगता॥ सर्वेकम्भा नावाड पाहता॥ गदग हांहां सरी तो धे
 ही॥ ४५॥ जाकं पनी त्रीकर्ण कुए॥ कंठी वाघन रवयदक झोम्ले॥
 वंकी मन गर्भ्याविं दृश्यु सुदाखे॥ सककताति मुद्रिका॥ ४६॥ कठीं
 सक्केक गैसुत्र॥ क्षुद्रघंगाकीं कीं सुखर॥ जे ग्रावे वस्तुष्टीगक्

ही

४६॥

४७॥

४५
र॥ सूर्यमतिमुद्रिका॥६॥ नेपुरेकपंसुकीतसाजीनि॥ मातेनेकष्ण
शरोनिकरीं॥ पाचबंहसुमीवरी॥ हळ्ळुहळ्ळुचालवित॥७॥ नेहस्ता
श्रयकर्नन॥ चालेवैकुंभे निधान॥ सर्वेचपठेजउखणेन॥ नेदसा
वरोनिधीत॥८॥ बकीमसधेयाणी॥ गडीघन॥ येकयेकाचजाश्रय
थक्नेन॥ कांपतकांपतहेघेजन॥ उठलिउभेगहुटी॥९॥ सर्वेचला
हक्तीथरणी॥ गहगहोहुंसेचकपाणी॥ सर्वेचउभागहोमी॥ दुष
हुणंनाचताती॥१०॥ नेहजाणीयत्रोहाजननी॥ ज्ञोवयासीणल्या



१

हरी

२८८

नितं विषीं ॥ श्रोत्रानां पीचक्र पांपीं ॥ नाचती हो घें पाहती गद्य ॥ लास्य
 जांफी तांजव ॥ दोन्हीं नृया चेशाव ॥ नेलास्य कक्षा माथव ॥ सवीतसे
 तेष्यवां गद्य ॥ करुग कीया नि तं विरीं ॥ वाजियि तीकवलुके करनीं
 मृण्यतीना चरे चक्र पापीं ॥ बै दनयनीं पाहत गद्य ॥ नस्तसंकेत ही
 वीभगवंता ॥ नृयकी गेलत ॥ श्रोत्रया गवकणीं हृस्त ॥ हरी
 पाहतयां कठे ॥ दंद्य ॥ वेष्टीत गवकणीं सकुमार ॥ याचकमककलि
 कासुंदर ॥ मथुं श्रीकृष्णमर ॥ नीकवर्णकं पासुं जीती ॥ दंड ॥ सुया

विज०

२८९



१४
ओं वती जैसी कीर्ते ॥ कीं द्राक्षी वेष्टी तता गंगयो ॥ कीं मुकुर श्रो वंती रजे ॥
दैश्वाका मिनी विलसती ॥ दृ ॥ कीं देवीं वेष्टी लास नृत्यनयन ॥ कीं द्रेस
कश्चक्रमारम्भ ॥ कीं कूक्षी वेष्टी वक्र मलासन ॥ जगडी वनते विश्वे
मे ॥ दृथा वृत्तक भीजगडी वन ॥ सदृग स्यु सुहा स्यवदन ॥ तेनृत्तक
करदेखोन ॥ सककगवक्षीं प्रसाद ॥ ७० ॥ विवित्तक काही माध्यम ॥
हड्डावतामी चेहावभाव ॥ देस्वतां सदृदसर्व ॥ गवकपीं तेहुं जाडीया ॥
॥ ७१ ॥ नंदयक्षीहावगवक्षीं ॥ नाचती तेहुं सप्रेसंकरनी ॥ तोंजाका

"Joint Project of the Banke Bihari Mandir, Deoband and the Yashoda Chaitanya Charak Trust, Umbra".

(10)

हनी

॥१४।

द्वाजां पीष्यरुक्मीं॥ नोचोलागलीतेष्वां॥ ७॥ तेजवायुजक॥ ना
 चोलागलेसकक॥ महेश्वरकुंसकक॥ नाचतीतेवेकां॥ ७॥ १॥ नाचेवे
 कुंठसस्तोक॥ चंद्रसुर्यकारीनाशक॥ गंगागंधर्ववसूजष्टक॥ न
 शीमंउठनाचतसे॥ ७॥ यश्वराजाचीतेहिणीं॥ येउनिषांहतीजांग
 जीं॥ तेऽहोयेकेऽयेउनीं॥ हांसततपातले॥ ७॥ मातेचेतानुंसुग
 कीं॥ तेयेंमीठीघालोंनिघननीछ॥ वरीकरोंनिमुखकमळ॥ गदगां
 हांसतसे॥ ७॥ मेनपर्वतयोरथोर॥ वनस्पतीजाचतीजठगमार॥

विज०

॥१५॥

वे रक्षा स पुरां गो समं य॥ कृष्ण चं देना चती॥ ८७॥ नाचती गो कुची
चीं सं दिरे॥ नाचती उदार ऐ दे करे॥ धातु मृतीयि करे॥ नाचती
स कक्क॥ ८८॥ उखव कजा देसु सबे॥ पहारी मात्रं ये कवे के॥ नां चोला
गवे घमनी के॥ कवतुक कमला हाले लें॥ ८९॥ अथ नं दधां उन्जि जव की ओर
ला॥ महं गो स कुमार मासा गरा॥ हृष्टि यो निकाकीं गीला॥ चुं बण
शीथ लें तेथ वां॥ ९०॥ नं दें जनं वजन्में तपके ले॥ ते ये कं चक्का सीला
ले॥ की ये शोहे चें स कृत प्रगट ले॥ ये कहां ये कवे के॥ ९१॥ साहो धी माता

१०४

१७०॥
हरी

१७०॥

पितरीं। तपकेलें ह्रीमके रारीं। तरीमांजी वरी श्री हरी॥ गत्रदिवसखेक
तसे॥ अथा कीं ग्रामीर कर्वतीं घारोनीं॥ ठाकीलें प्रयागीं त्रीवेदीं॥ तरीच
हरीमुख चुंबोनीं॥ बारं बार आठ तीर॥ कीं साथि लें जगनीं साधन॥ निरा
हार तुं गर्जे जेनिजोन॥ तीसा तीपुरे युरेन॥ नंदयग्नोहनिजती॥ अथा
कीं महा क्रतुके लायोर॥ विपुरुहसु तुजीलाधगमर॥ तीचसंगे घे
उनिसर्वेशर॥ नंदयग्नोहनिजेविती॥ अथा कीं प्रेमेके लें हरी कीर्तन॥ कीं सं
तां चेके लें जार्चपा॥ तरीनवपंकज दक्षनयन॥ मीरीघाली निजगकां॥ अथा

विज०

१७०॥



मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००९ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com